अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत

ई-संस्करण

अंक : 7

नवम्बर 2023

उज्ज्वल भविष्य का
साझा संकल्प

वर्ष: 69 अंक: 2

नवम्बर 2023

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

‘अणुव्रत’ की कल्पना बहुत सुंदर है। देश में नैतिकता की गहरी कमी दिखायी पड़ती है। उसमें परिवर्तन करने के लिए अणुव्रत आंदोलन सहायक हो सकता है। आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत आंदोलन की सफलता के लिए हम सबकी श्रद्धा और सहयोग के अधिकारी हैं।

- राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2.
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

नये क्षितिज की ओर

नवम्बर का यह महीना विशिष्ट हो चला है। एक तरफ अणुव्रत अमृत महोत्सव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अणुव्रत अनुशास्ता के पावन सान्निध्य में 74वां अणुव्रत अधिवेशन हो रहा है, वहीं अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक महान संत आचार्य श्री तुलसी का 110वां जन्मदिवस पूरे देश में अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इसी बीच दीपों का पर्व मानो अणुव्रत के जीवन-दर्शन को एक नया अर्थ प्रदान कर रहा है।

अणुव्रत आज विश्व में बढ़ रहे अनैतिकता के अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश के लघु दीप जला-जला कर विशाल दीपमाला के रूप में दुनिया को नैतिकता, सदाचार और सद्भाव के प्रकाश से रोशन कर रहा है। अणुव्रत कहता है - अंधेरे को कोसना निरर्थक है, स्वयं दीपक बनो। किसी और से दीपक बनने की अपेक्षा करने से पहले स्वयं से शुरुआत करो। यही अणुव्रत है। यही अणुव्रत का सार है।

15 नवम्बर, भैया दूज का दिन अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी का 110वां जन्मदिवस है जिसे हम प्रतिवर्ष अणुव्रत दिवस के रूप में मनाते हैं। अणुव्रत के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी ने संयम को मानव जीवन की सफलता में केंद्रीय स्थान प्रदान किया था। अतः अणुव्रत दिवस के दिन उपवास के रूप में संयम का संकल्प आचार्य श्री तुलसी के प्रति आमजन की भावांजलि का ही एक रूप है। संयम हमारे जीवन के हर एक हिस्से का साथी बने, यही अणुव्रत दिवस का संदेश है।

उस महान आत्मा के प्रति अनन्त नमन!

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

■ प्रेरणा पाथेय ■

अणुव्रत है संप्रदाय-विहीन धर्म

■ आचार्य तुलसी

नितान्त लौकिक क्षणों में जीने वाला व्यक्ति भी अलौकिक अनुभूति के खूबसूरत पलों की प्रतीक्षा करता है। वे पल उसकी चेतना को भीतर से छूते हैं और उसमें जीवन के प्रति नयी आस्था पैदा करते हैं। उस अरूप सत्ता और शक्ति का अनुभव करने के बाद वह एक नयी सोच को विकसित करता है। एक दृष्टि तक अपना अनुभव उसके साथ नहीं जुड़ता है, तब तक उसको स्वाभाविक स्वीकृति नहीं मिल सकती। भीतर का वह अनुभव बाहर प्रकट होता है, तब उसकी पहचान धर्म के रूप में की जाती है।

इस संसार में धर्म चलता है और धर्म-सम्प्रदाय भी चलते हैं, बल्कि मानना चाहिए कि धर्म से अधिक धर्म-सम्प्रदाय चलते हैं। आज कोई भी व्यक्ति धर्म के कारण धार्मिक नहीं कहलाता, सम्प्रदाय के नाम पर धार्मिक कहलाता है। एक ओर धार्मिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, दूसरी ओर धार्मिकों की संख्या बढ़ती जा रही है। पतनशील धार्मिक मूल्यों के बीच में क्या कोई धार्मिक बना रह सकता है? यह एक ऐसा सवाल है, जो तह में उतरकर सोचने के लिए विवश करता है।

भारतवर्ष बड़ी आबादी का देश है। भारतीय संस्कृति धर्मप्रधान संस्कृति है। यहां शत-प्रतिशत नहीं तो कम-से-कम नब्बे प्रतिशत व्यक्ति धार्मिक हैं। जैन, बौद्ध, ईसाई, सनातनी, मुस्लिम सभी तो स्वयं को धार्मिक मानते हैं। इनकी धार्मिकता मजहबी धार्मिकता है। अब अगर यह सर्वे किया जाये कि इन नब्बे प्रतिशत धार्मिकों में प्रामाणिक कितने हैं? संभव है, इस प्रश्न के उत्तर से जुड़ने वाले लोग एक प्रतिशत भी नहीं मिलेंगे। यह स्थिति दोहरे मूल्यों की

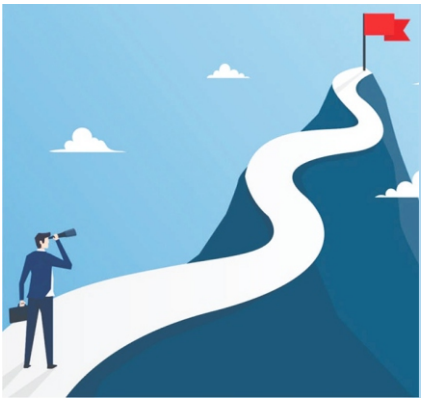

धर्म कहलाने या दिखने का तत्त्व है ही नहीं। वह तो एक जीवनशैली है, जो अनुभव में आनी चाहिए।

संस्कृति को पनपा रही है। अन्यथा किसी धार्मिक व्यक्ति के जीवन पर अप्रामाणिकता की छाया ही कैसे पड़ सकती है? सबसे अधिक आश्चर्य की बात यही है कि व्यक्ति अपने आपको धार्मिक मानने या दिखाने में जितने गौरव का अनुभव करता है, उतना ही गौरव उसे भ्रष्टाचार और बेईमानी करते समय भी उपलब्ध हो जाता है। इस द्वन्द्व को कैसे दूर किया जाये?

सामान्यतः धर्म का सम्बन्ध आचरण के साथ न जोड़कर कुल-परम्परा के साथ जोड़ा जाता है। व्यक्ति जिस कुल या वर्ग में पैदा होता है, उस कुल या वर्ग के धर्म का अनुयायी वह कुछ किये बिना ही हो जाता है। कुल-परम्परा से प्राप्त धर्म का क-ख-ग न जानने पर भी वह जैन, बौद्ध या सनातनी कहलाता है। यह विसंगति जीवन को खोखला बना रही है क्योंकि धर्म कहलाने या दिखने का तत्त्व है ही नहीं। वह तो एक जीवनशैली है, जो अनुभव में आनी चाहिए। अप्रामाणिक या अनैतिक जीवन में धार्मिक होने का दावा फटे टाट में रेशमी पैबन्द लगाने जितना हास्यास्पद है।

एक धार्मिक कहलाने वाला व्यक्ति चरित्रहीन हो, हिंसा पर उतारू हो, आक्रांता हो, धोखाधड़ी करने वाला हो, मिलावट करता हो, छुआछूत के मानदण्ड में उलझा हुआ हो, दुर्व्यसनों में फँसा रहता हो, शराब पीता हो, खान-पान की शुद्धि का ध्यान न रखता हो और भी अनेक अनैतिक आचरण करता हो, क्या वह धार्मिक कहलाने का

अधिकारी है? ऐसा धार्मिक व्यक्ति धर्म की सच्चाइयों को आत्मसात कैसे करेगा?

धार्मिक व्यक्ति की यह दोहरी भूमिका धर्म के माथे पर एक ऐसा कलंक है, जिसे धोने के लिए धार्मिक अंधविश्वासों और कुरीतियों को यथार्थ के नजरिये से देखने की जरूरत है। सम्प्रदायों को गौण कर धर्म को उसके अपने रूप में परखने की जरूरत है। यह जरूरत आज जितनी है, पहले भी इतनी ही थी। बल्कि उस समय अधिक थी। उन दिनों देश में विदेशी दासता का उमस भरा माहौल था। राष्ट्रीयता के प्रेम में डूबे हुए कुछ लोगों ने गांधीजी के नेतृत्व में अहिंसात्मक बगावत की। उसे कुचलने का निर्मम प्रयत्न हुआ, पर आखिरी जीत अहिंसा की हुई। वह समय देशवासियों के लिए संक्रांति का समय था। संक्रांतिकाल में राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी मूल्यों में गिरावट की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। धार्मिक मूल्यों को नया परिवेश देने का दायित्व धर्म-गुरुओं पर होता है। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने देश की आजादी के साथ-साथ सम्प्रदाय-विहीन धर्म अथवा एक नैतिक आंदोलन की शुरुआत की, जो आज 'अणुव्रत' के नाम से अपनी अच्छी पहचान बना चुका है।

'अणुव्रत' का विधान बनाते समय विशेष रूप से लक्ष्य रखा गया कि यह किसी सम्प्रदाय का रूप न ले ले।

'अणुव्रत' का विधान बनाते समय विशेष रूप से लक्ष्य रखा गया कि यह किसी सम्प्रदाय का रूप न ले ले। अणुव्रत को स्वीकार करने वाला व्यक्ति अणुव्रती होता है, फिर चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, मजहब, लिंग, रंग और भाषा से संबंधित हो। मानवीय मूल्यों में आस्था अणुव्रती बनने वाले की न्यूनतम योग्यता है। जो लोग यह मानते थे कि सम्प्रदाय के बिना धर्म नहीं हो सकता, अणुव्रत उनके सामने सम्प्रदाय-विहीन धर्म का प्रतीक बन गया।

अणुव्रत आन्दोलन के प्रारम्भ में अणुव्रत को अनेक प्रकार की आशंकाओं के घेरे में रहना पड़ा। हम स्वयं भी इसकी संभावनाओं के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थे, क्योंकि सही तत्त्व को भी संकीर्ण नजरिये से देखने पर उसमें साम्प्रदायिकता का पुट लगाया जा सकता था। किन्तु अणुव्रत ने लोक-मानस पर एक छाप छोड़ी। जनता ने उसको अपनाया और जन-समर्थन के कारण ही वह देशव्यापी आन्दोलन बन गया।

अणुव्रत किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत धार्मिक आस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं करता। यह तो केवल इसी बात पर बल देता है कि व्यक्ति अपने जीवन को पवित्र और आचरण को उन्नत रखे। धर्म की पुस्तकों, धर्म की पाठ-पूजा, धर्म-तीर्थों की यात्रा और धर्म के बाह्य चिह्नों से इसका कोई सरोकार नहीं है। यह धर्म को व्यवहार में उतरा हुआ देखना चाहता है।

अणुव्रत का उद्देश्य है सही इंसान का निर्माण। नये जीवन-दर्शन को जीने वाले मनुष्य का निर्माण। जिस मनुष्य के पास जीवन का कोई दर्शन नहीं होता, वह अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं हो सकता। इसी बात को ध्यान में रखकर अणुव्रत ने एक छोटी-सी आचार संहिता दी, जो मानवीय आचार संहिता के रूप में प्रसिद्ध है।

अणुव्रत जीवन का दर्शन है। इसे समझकर जीवन-व्यवहार में लाने वाला व्यक्ति सही अर्थ में इंसान बन सकता है। इंसान अपने वास्तविक अर्थ में इंसान बने, यही छोटा-सा लक्ष्य है अणुव्रत का।

'लोकतंत्र में भी अनुशासन का होना आवश्यक है...' आचार्य श्री महाश्रमण का प्रवचन सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..

अच्छाइयों का चमत्कार

अखिलेश आर्येन्दु, दिल्ली

संसार की हर वस्तु या जीव-जन्तु में कोई न कोई अच्छाई और सकारात्मक तत्त्व होता ही है। इसलिए जहाँ और जिस हालात में रहें, वहाँ अच्छाइयों, सुन्दरताओं और शुभताओं को देखने की आदत डालिए। जितनी आपकी खोज अच्छाई की ओर बढ़ती जाएगी, आपका हृदय, मन और चेतना पवित्र और विशाल व उदार बनते जाएंगे।

रोजाना एक अच्छाई ग्रहण करने और एक बुराई छोड़ने का संकल्प कीजिए, फिर देखिए जीवन में किस तरह सकारात्मक बदलाव आता है। कुछ ही दिन में आप देखेंगे जिंदगी में हर तरफ सकारात्मकता के सूर्य का उदय हो गया है, जो खुद को ही नहीं, समाज को भी अपने उज्ज्वल प्रकाश से प्रकाशित कर रहा है। यह किसी चमत्कार से कम नहीं होगा। फिर तो वे लोग भी आपके प्रशंसक व कायल हो जाएंगे जो अभी तक आपमें बुराई तलाशते रहते थे। दुर्गुणी लोग भी आपसे प्रेरणा लेने लगेंगे और अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित होने लगेंगे।

अच्छाइयों में ही शक्ति है, पवित्रता और आनंद है। अच्छाइयां ही व्यक्ति, परिवार और समाज की उत्तमता का आधार हैं। यह ऐसी शक्ति है जिसे लगातार बढ़ाते रहने से ये व्यक्ति और समाज को अकूत बल से भर देती हैं। यह शक्ति जीवन को शिखर पर ले जाने का आधार प्रदान करती है। जैसे मधुमक्खियां फूलों का पराग चूसकर मीठा शहद इकट्ठा कर लेती हैं, उसी तरह अच्छाई रूपी पराग जहाँ से भी मिले, उसे ग्रहण करने में कभी हिचकिचाना नहीं चाहिए। छोटे से छोटे व्यक्ति, वस्तु, किताब जिसमें भी अच्छाई दिखे, उसे बिना देरी किये ग्रहण कर लेना चाहिए।

अच्छाइयों को अपनाने का इरादा सकारात्मकता के साथ करना चाहिए। प्रतिदिन इसका अभ्यास करते रहने से नकारात्मकता का हमेशा के लिए अंत हो जाता है और हालात में बदलाव आने लगता है। अपना नजरिया, अपने भाव और अपने विचार तीनों की समीक्षा लगातार करते रहने से जहाँ सद्गुणों में बढ़ोतरी होती है, वहीं आंतरिक शक्ति भी बढ़ती जाती है। आंतरिक शक्ति या आत्मिक शक्ति मानव की सबसे बड़ी शक्ति व पूँजी है। यही हमारी चेतना को विस्तार देती है। इसी से असंभव दिखने वाले कार्य संभव हो पाते हैं। इसलिए अपनी दृष्टि में बदलाव करके अन्दर छिपी शक्ति और प्रतिभा को निखारिए।

आंतरिक शक्ति या आत्मिक शक्ति मानव की सबसे बड़ी शक्ति व पूँजी है। यही हमारी चेतना को विस्तार देती है।

अपने अवचेतन में यह बात बिठा लीजिए कि जीवन सकारात्मक, शुभ, श्रेष्ठ और आनंद जैसे दैवीय तत्त्वों को अर्जित करने के लिए मिला है, इसे हम जरूर ही अर्जित करके रहेंगे। अपने अंदर उन वस्तुओं, विचारों और विषयों को कभी जगह मत दीजिए जो नकारात्मकता को बढ़ाने वाले हों। अपने कर्त्तव्यों और कार्यों को अच्छी प्रकार से करने की आदत डालिए। जहाँ भी, जिसमें भी, अच्छाई दिखे, उसकी प्रशंसा कीजिए और उसे अपने अंदर समाहित कर लीजिए। अच्छा सुनने, अच्छा बोलने और अच्छा करने की आदत डालिए।

आशा, विश्वास और आनंद अपने अंदर हमेशा बसाये रखिए। यह आंतरिक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है। उन लोगों, वस्तुओं और विषयों से हमेशा दूरी बनाये रखिए, जो नकारात्मक भावों, विचारों और आंतरिक वातावरण को दूषित करते हैं। फिर देखिए, जीवन में कैसे दिखायी देता है अच्छाइयों का चमत्कार।

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी
का 110 वां जन्म दिवस

अणुव्रत दिवस

15 नवम्बर 2023
कार्तिक शुक्ल द्वितीया

संयम के प्रतीक स्वरूप

उ प वा स

आइए! इस दिन उपवास रखकर
संयम को अपने जीवन में प्रतिष्ठापित करें।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

www.anuvibha.org

इस अभियान से जुड़ने के लिए सम्पर्क सूत्र
+91- 91166 34512
+977 984-2055685

आओ मित्रो! चित्र बनाएं

रचयिता : साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा

आओ मित्रो! चित्र बनाएं सुंदर हिंदुस्तान का,
धीर बनें गंभीर बनें हम पढ़ें पाठ बलिदान का,
जगमग दीप जले, हर संकल्प फले।।

भारतवर्ष हमारा प्यारा कभी विश्व गुरु कहलाया,
ऋषियों की यह भूमि मनीषी कवियों ने गौरव गाया।
आध्यात्मिक शिखरों को छूकर जग में परचम लहराया,
सच्चरित्र वीरों ने रण में रिपुओं का दिल दहलाया।
संरक्षण करना है हमको अब इसके सम्मान का।।

हिंदू मुसलमान बनने से पहले हम इंसान बनें,
चोरी झूठ फरेब छोड़ गुणवत्ता से गुणवान बनें।
डरें नहीं कष्टों से सुख में दु:ख में हम धृतिमान बनें,
छोड़ भरोसों पर जीना खुद ही अपनी पहचान बनें।
एकमात्र हो लक्ष्य हमारा नये जीवन-निर्माण का।।

हम बदलेंगे युग बदलेगा दृढ़ विश्वास हमारा है,
निज पर शासन फिर अनुशासन सर्व शुभंकर नारा है।
सत्य-अहिंसा का शास्त्रों में विपुल विमल उजियारा है,
चमक रहा जो विश्व पटल पर वह अणुव्रत ध्रुवतारा है।
जागो आलस त्यागो अवसर है अपने उत्थान का।।

इस गीत को मीनाक्षी भूतोडिया की आवाज में सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..

रूपांतरण

प्रभाशंकर उपाध्याय, सवाई माधोपुर

मनमोहन देर रात घर आता। खाना खाकर कमरे में शराब की बोतल खोलता और नशे में सुध खोकर वहीं सो जाता। पिछले दस साल से यही उसका रोज का क्रम था। मनमोहन एक बैंक में अधिकारी था। जब बेटी छोटी थी तो उसने परिवार को साथ रखा। बाद में माता-पिता अशक्त हुए और बेटी बड़ी कक्षा में पढ़ने लगी तो परिवार को अपने पैतृक निवास पर छोड़, स्वयं अकेला रहकर नौकरी करने लगा। उसके तबादले भी होते रहे। उसी दौर में सहकर्मी अधिकारी के साथ साझा तौर पर एक कमरे में रहा तो उस पियक्कड़ ने मनमोहन को भी शराब का आदी बना दिया।

जब घर वालों को पता लगा तो बड़ी हाय-तौबा हुई। पत्नी मीना ने कई कसमें दीं, किन्तु कई बार छोड़ने की ठानने के बावजूद शराब न छूटी। बुजुर्ग माता-पिता ने हारकर मौन धार लिया। उस आघात को वे सह न सके और एक वर्ष के अंदर ही दोनों इहलोक को त्याग गये। मीना ने भी एक परोक्ष समझौता कर लिया। कुछ वर्ष बाद जब वह स्थानांतरित होकर अपने गृह नगर आया तो मीना ने एक अलग कमरे में उसके पीने-खाने-सोने की व्यवस्था कर

दी। एक दिन देर शाम वह नशे में धुत होकर घर लौटा और बंद किवाड़ों को बड़े जोरों से भड़भड़ा दिया। मीना ने दरवाजा खोला। लस्त-पस्त मनमोहन लहराता हुआ भीतर घुसा। ड्राइंग रूम में सोफे पर दो पुरुष, दो स्त्रियां और एक युवक बैठे थे। बेटी शोभना भी उनके पास ही बैठी थी।

''कौन है यह बदतमीज?'' एक व्यक्ति ने तैश में आते हुए पूछा।

''जी...ये..मेरे पापा हैं..।'' शोभना मंद स्वर में बोली। शर्मिंदगी से उसका चेहरा लाल हो गया। मीना भी लज्जा से गड़ी जा रही थी।

''जिस घर में बाप शराबी हो, वहाँ हम अपने बेटे का रिश्ता कैसे कर सकते हैं?'' यह कहकर पाँचों चले गये।

दरवाजे के पास झूमता मनमोहन सोफे पर जा पसरा। अगली सुबह सोफे पर सोये मनमोहन की आँखें जब खुलीं तो दिन निकले काफी देर हो चुकी थी। घर में अजब-सी वीरानी छायी थी। वह धीमे-धीमे रसोईघर की ओर बढ़ा। मीना वहाँ बर्तन मांज रही थी।

''मीना, चाय..।'' मीना ने इलेक्ट्रिक केटल से कप में चाय उड़ेली और उसकी ओर बगैर देखे कप बढ़ा दिया।

''आज बहुत नाराज लग रही हो।'' मीना फफक पड़ी। ''सॉरी...मीना..। कल रात मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी।'' मनमोहन ने कान पकड़े।

''तुम बैंक से देर रात आते हो और शराब लेकर बैठ जाते हो। बच्ची कितनी बड़ी हो गयी, उसकी शादी की कोई फिक्र नहीं। एक लड़के ने किसी शादी समारोह में हमारी शोभू को देखा और पसंद कर लिया था। वह लड़का कल रात अपने मम्मी-पापा को साथ लेकर आया था। अच्छा-खासा परिवार है। वे शोभू का हाथ माँग रहे थे। शोभना ने भी सहमति दे दी थी। बस, तुम्हारे आने का इंतजार था। कितने फोन लगाये पर तुमने कॉल रिसीव नहीं की। और जब घर लौटे तो नशे में चूर होकर।'' मीना बस बोलती चली गयी।

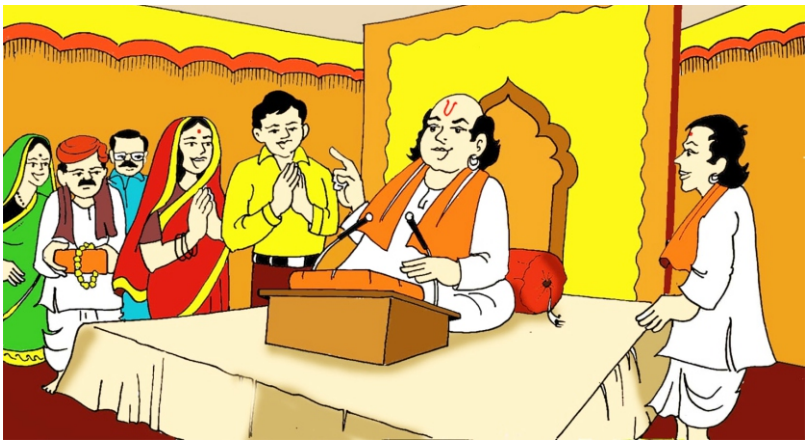

मनमोहन का चेहरा फक्क पड़ गया था। उसे अपनी प्रतिष्ठा और बेटी का भविष्य तार-तार होता प्रतीत हुआ। ...और हुआ भी वही। मनमोहन के शराब के नशे में धुत होकर घर लौटने की बातें पूरे शहर और समाज में फैल गयी। मारे आत्मग्लानि के दो दिन तक वह घर से बाहर नहीं निकला। उसने शराब को छुआ तक नहीं, भोजन भी लौटा दिया। पत्नी और बेटी को उसकी चिंता हुई।

तीसरी सुबह मनमोहन अपने बिस्तर पर नहीं था। पोर्च में कार भी नहीं थी। माँ-बेटी को चिंता हो गयी। बगैर बताये इतनी सुबह कहाँ निकल गये? दो घंटे बीत गये। अवसाद में आकर कुछ अनर्थ न कर न बैठे हों? तभी कार आकर रुकी। माँ-बेटी लपकीं।

''मीना, मेरा शेविंग का सामान ला दो।'' अंदर आते हुए मनमोहन ने कहा। शेव करने के बाद बाथरूम की ओर जाते हुए मनमोहन बोला,''भोजन बना लो मीना। बहुत भूख लगी है।'' माँ-बेटी दोनों चकित थीं। अनेक सवाल दोनों के मन में घुमड़ने लगे। स्नानादि से निवृत्त होकर मनमोहन डाइनिंग टेबल पर आ बैठा। केवल अपने लिए थाली देख पत्नी से कहा कि वह खुद के लिए और शोभू के लिए भी खाना लगा दे। साथ बैठकर खाएंगे। दोनों ने जब अपना कौर तोड़ लिया तो वह बोला,''अभी स्वामीजी के पास से आ रहा हूँ। उन्हें मैंने सारी बातें बता दीं। मुझे वहाँ जाकर असीम शांति महसूस हुई। स्वामीजी यह जानकर

प्रसन्न हुए कि मैंने शराब छोड़ दी है। स्वामीजी ने कहा है कि ईश्वर में आस्था बनाये रखो। वह भला ही करेगा।''

अगले दिन से मनमोहन ने बैंक जाना शुरू कर दिया। घर का वातावरण भी धीरे-धीरे सामान्य हो चला था। मनमोहन ने बेटी की शादी के लिए प्रयास प्रारंभ कर दिये थे। कुछ परिवारों से बात आगे भी बढ़ी किन्तु जब उन्हें उसके अतीत का पता चला तो उन्होंने किनारा कर लिया। एक वर्ष बीत गया। अब मनमोहन का मन पुनः हीनबोध में डूब गया। वह एक दिन स्वामीजी की शरण में जा पहुँचा। उसकी आँखों में आँसू भरे थे। मनमोहन की व्यथा जानकर स्वामीजी सौम्यतापूर्वक बोले,''मुझे उस परिवार का परिचय दो, जहाँ से तुम्हारी बेटी के लिए विवाह का पहला प्रस्ताव आया था।'' मनमोहन ने उस युवक और उसके पिता का नाम बता दिया।

''दो दिन बाद इस शहर में मेरा प्रवचन है। तुम अपनी पत्नी और पुत्री को लेकर वहाँ अवश्य आना।'' स्वामीजी मुस्कुराते हुए बोले।

दो दिन बाद मनमोहन सपरिवार वहाँ पहुँच गया। प्रवचन की पूर्णाहुति के बाद स्वामीजी ने मनमोहन को अपने पास बुलाया और श्रोताओं की ओर उन्मुख होकर कहा,''इस व्यक्ति ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से शराब पीने की अपनी आदत छोड़ दी। ऐसे व्यक्ति विरले होते हैं, जो ठोकर खाकर संभल जाएं। हालाँकि उस बुरी आदत का परिणाम इसने और इसके परिवार ने बहुत भुगता, मगर अब यह शराब को छूता भी नहीं है।''

फिर स्वामीजी ने मनमोहन की पत्नी और बेटी को भी अपने पास बुलाया। तत्पश्चात् उन्होंने एक नाम पुकारा। भीड़ में से जो व्यक्ति उठकर आगे आया, वह उस युवक का पिता था, जिससे शोभना के रिश्ते की बात पहले चली थी।

''मदिरापान मनमोहन की बुरी आदत थी। अब वह मदिरा को छूता भी नहीं। तुम्हारे पुत्र को भी यह कन्या पसंद थी। बताओ, क्या तुम इसका रिश्ता लेने के लिए राजी हो?''

कुछ हिचक के साथ वह व्यक्ति बोला, ''यदि यही आपकी आज्ञा है...तो अवश्य पालन करूँगा।''

''वत्स, अभी तुम्हारे मन में संकोच है। अपने पुत्र और पत्नी को यहाँ बुलाओ।'' दोनों मंच पर आ गये।

स्निग्ध स्वर में स्वामीजी ने युवक से कहा, ''पुत्र! क्या तुम्हें यह लड़की आज भी स्वीकार्य है?'' नौजवान ने मुस्कुराते हुए सिर झुका लिया।

अब स्वामीजी युवक की माँ की ओर उन्मुख होकर बोले, ''बहन! शराब का अब उस घर में प्रवेश वर्जित है। क्या अब इस कन्या को तुम अपनी बहू बना सकोगी?''

उस स्त्री ने प्रसन्न मुख से कहा, ''गुरुजी! मुझे यह रिश्ता मंजूर है।'' स्वामीजी ने लड़के-लड़की को अपने पास बुलाया और कहा, ''आओ बच्चो, अब अपने माता-पिता का आशीष लो।''

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

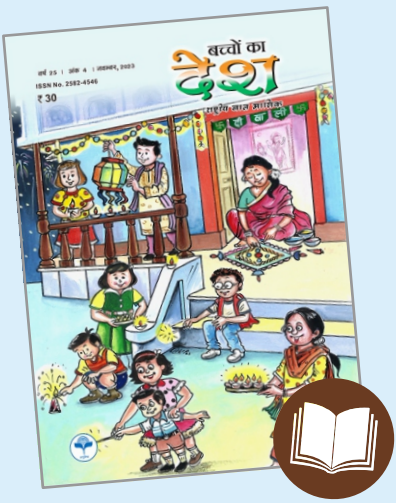

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए
पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

काव्य-रस

अणुव्रत के हम सौम्य पखेरू...

■ वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ ■

अणुव्रत के हम सौम्य पखेरू
फुरफुर उड़ते जाएं।

सत्य-अहिंसा-समरसता का
गुर सबको सिखलाएं।।
समय पे सोएं-समय से जागें
समय का रखें ध्यान,
समय पे ही हर काम करें हम
होता समय महान।
सुखमय जीवन का सबको ये
मूल मंत्र समझाएं।

अणुव्रत के हम...

मानवता और सहनशीलता
हों अपने आभूषण,
बनें विवेकी अधिक न बोलें
मिले बुद्धि को पोषण।
संयम-नियम सरल जीवन के
सीखें और सिखाएं।

अणुव्रत के हम...

मन या कर्म-वचन से कटुता
किसी के प्रति न पालें,
अच्छे कर्म समय पर कर लें
बुरी सोच को टालें।
लालच-लोभ-द्वेष-ईर्ष्या ये
कभी न छूने पाएं।

अणुव्रत के हम...

लक्ष्मी का आगमन

मीरा जैन, उज्जैन

हाल ही में पड़ोस में रहने आयी हमउम्र सारिका का मुस्कुराते हुए व्यंग्यात्मक लहजे में स्वर उभरा – ''ओ हो सुनिधि! सुबह से लगी हो घर सजाने में। द्वार पर फूलों के हार, दीवारों पर लाइट का बाजार, आँगन में रंगोली, मुंडेर पर दीपों की बहार...। अब बस भी करो। तुम्हारे यहाँ तो पहले से ही लक्ष्मीजी की अपार कृपा है। कुछ पड़ोस के लिए भी छोड़ दो बहना।''

हँसते हुए सुनिधि ने जवाब दिया – ''दीपावली में साज-सज्जा करना परंपरा के निर्वाह के साथ ही मन को सुकून एवं हृदय को अद्भुत खुशियों से भर देता है। रही माँ लक्ष्मी के आगमन की बात तो वह हमारे यहाँ सदैव से विद्यमान हैं और रहेंगी।''

अचरज में डूबी सारिका ने प्रश्न किया – ''माँ लक्ष्मी के विराजमान रहने के प्रति तुम इतनी आश्वस्त कैसे हो सकती हो? यह तो धूप-छाँव हैं। कब आती हैं कब जाती हैं किसी को पता ही नहीं लगता?''

सुनिधि ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहा – ''मेरी सासू माँ ही इस घर की प्रत्यक्ष लक्ष्मी हैं। उनके द्वारा दिये गये संस्कारों की परिणति है कि मेरे पति में न नशा आदि की कोई गलत आदत है और न ही आचरण में कोई खोट। जहाँ जीवन शुद्ध, सात्विक और आचरण निर्मल हो, वहाँ माँ लक्ष्मी को बुलाना नहीं पड़ता। वे स्वयं चली आती हैं।

अणुव्रत आंदोलन

चुनाव शुद्धि अभियान

सही चयन

राष्ट्र का सही निर्माण

I Vote For A Strong India

आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन?

- जो ईमानदार हो
- जो चरित्रवान हो
- जो सेवाभावी हो
- जो कार्यनिपुण हो
- जो नशामुक्त हो
- जो स्वच्छ छवियुक्त हो
- जो राष्ट्रहित व लोकहित को सर्वोपरि मानता हो
- जो जाति-सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो

मतदाता ध्यान दें...

- भय और प्रलोभन में मतदान न करें।
- मद्य एवं मादक द्रव्यों का प्रतिकार करें।
- चरित्र एवं गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें।
- जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर मतदान न करें।
- अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- हिंसात्मक प्रवृत्तियों में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- अवैध मतदान न करें।

मतदान अवश्य करें, राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वहन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

राष्ट्रहित में प्रसारित

www.anuvibha.org

आगामी परिचर्चा का विषय

शर्मसार होती मानवता के गुनहगार कौन?

एक युद्ध थमता नहीं, उससे पहले दूसरा शुरू हो जाता है। दुनिया में जगह-जगह युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। कोई नहीं जानता कब कहाँ नया युद्ध शुरू हो जाये। ये युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच नहीं होते वरन शहरों, कस्बों और बस्तियों को ही युद्ध का मैदान बना दिया जाता है। बच्चों, महिलाओं और निर्दोष नागरिकों की मौतें अब किसी को विचलित नहीं करतीं।

बड़े-बड़े ताकतवर देश भी अपने स्वार्थ के गणित को आधार बना आग में घी डालने से नहीं चूकते। मानवता का प्रश्न इन ताकतों के सामने आज गौण हो गया लगता है। ऐसे में क्या युद्धविहीन विश्व की कल्पना की जा सकती है? कैसे?

'**शर्मसार होती मानवता के गुनहगार कौन?**' इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 30 नवम्बर 2023 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर के माध्यम से भेजें।

चयनित विचार जनवरी 2024 अंक में प्रकाशित किए जाएँगे।

9116634512

गौरवशाली अतीत के झरोखे से

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ ''मेरा जीवन : मेरा दर्शन।''

अणुव्रत शिक्षक संसद का गठन

आचार्य तुलसी का स्पष्ट मत था कि शिक्षा के साथ संस्कारों का योग होने पर ही वह अधिक कार्यकारी बन सकती है क्योंकि शिक्षा जीवन-निर्वाह की कला है और संस्कार जीवन-निर्माण की कला है। वर्तमान शिक्षा पद्धति विद्यार्थी को किस दिशा में ले जा रही है? यह प्रश्न अनेक बार बहस का मुद्दा बन चुका है, पर कोई ठोस समाधान नहीं निकला। उच्च स्तरीय शिक्षा के बावजूद शिक्षा जगत की समस्याएं उलझी हुई हैं। शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक - तीनों का गहरा सम्बन्ध है। शिक्षार्थी में शिक्षा को संप्रेषित करने वाला शिक्षक होता है। शिक्षक का जीवन और उसकी कार्यशैली प्रशस्त रहे, इस दृष्टि से अनेक उपक्रम किये जा रहे थे। आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में 1990 में अणुव्रत के मंच से इस विषय पर चिन्तन हुआ

और अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत शिक्षक संसद के पुनर्गठन का निर्णय किया गया।

अणुव्रत शिक्षक संसद का प्रथम अधिवेशन

विद्याभूमि राणावास में 1 दिसम्बर 1990 को अणुव्रत शिक्षक संसद का त्रिदिवसीय अधिवेशन शुरू हुआ। इसमें संभागी बनने के लिए देश के कोने-कोने से सैकड़ों शिक्षक आये। जनता के बीच उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा-''देश के सामने अनेक समस्याएं हैं। उनमें चरित्रहीनता, अनास्था, नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन आदि ऐसे मुद्दे हैं, जिनके रहते देश में डॉक्टर, शिक्षक, वकील तो बन सकते हैं, पर अच्छे मानव नहीं बन सकते। अणुव्रत मानव को अहिंसक, सम्प्रदायमुक्त एवं शोषणमुक्त जीवन जीने की कला सिखाता है। शिक्षकों का दायित्व है कि वे ज्ञानप्राप्ति के विशाल एवं व्यापक उद्देश्यों को सामने रखकर विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण के प्रति जागरूक रहें। उन्हें स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ और परमार्थ के स्तर पर जीना सिखाएं। ऐसा करके ही आप अपने देश को अच्छे मनुष्य दे पाएंगे।''

शिक्षक संसद का दूसरा अधिवेशन

1 से 3 फरवरी 1992 तक अणुव्रत शिक्षक संसद का अधिवेशन चला। असम, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र,

कर्नाटक, राजस्थान आदि विभिन्न प्रान्तों से लगभग साढ़े चार सौ प्रतिनिधि अधिवेशन में संभागी थे। सब अणुव्रती बने, समर्पित बने। अणुविभा की व्यापकता बढ़ी और भविष्य का सुन्दर एहसास हुआ। कुछ निर्णय भी लिये गये।

अणुव्रत शिक्षक संसद का तीसरा अधिवेशन

9 जनवरी 1993 से अणुव्रत शिक्षक संसद का तृतीय वार्षिक अधिवेशन शुरू हुआ। देश के बारह प्रान्तों से लगभग छह सौ शिक्षक बीदासर में उपस्थित थे। अणुव्रत अब अपना राष्ट्रीय रूप लेने लगा था।

उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा-''शिक्षा आज व्यवसायोन्मुखी बन गयी है। उसे जीवनमुखी बनाने की अपेक्षा है। शिक्षा को बदला जा सकता है, पर यह काम राजनेता नहीं कर सकते, शिक्षक ही कर सकते हैं। शिक्षक केवल शिक्षक ही नहीं हैं, वे गुरु भी हैं। गुरु का पहला काम है अच्छे नागरिकों का निर्माण करना। अणुव्रत शिक्षक संसद इस सन्दर्भ में वातावरण का निर्माण कर रही है।''

शिक्षा के सन्दर्भ में शिखर सम्मेलन

16 दिसम्बर 1993 को दिल्ली में एक विशेष सेमिनार होने वाला था। सेमिनार का विषय था - सभी के लिए शिक्षा। प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हाराव की ओर से आचार्य श्री तुलसी को भी सेमिनार में आने के लिए आमंत्रण मिला।

जनसंख्या बहुल नौ देशों के इस सम्मेलन में कुछ राष्ट्राध्यक्षों तथा वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति संभाव्य थी। जैन मुनि की चर्या को देखते हुए आचार्यश्री का वहाँ जाना संभव नहीं था। ऐसे में शिखर सम्मेलन के लिए आचार्य श्री तुलसी ने एक लिखित सन्देश दिया। सन्देश की भाषा इस प्रकार थी -

''सभी के लिए शिक्षा - यह घोष महत्वपूर्ण है। यह मानव की योग्यता की स्वीकृति है, मानवता का सम्मान है। हमें

शिक्षा के स्वरूप पर अवश्य चिन्तन करना चाहिए। ज्ञान और चरित्र दोनों का सन्तुलित विकास हो, यही शिक्षा सबके लिए उपयोगी हो सकती है। सब लोग प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर नहीं बनते। कुछ ही लोग शिक्षा के इन विशेष क्षेत्रों में प्रवेश पाते हैं। साक्षरता और सामान्य अध्ययन को ही व्यापक बनाया जा सकता है। किन्तु उसके साथ अहिंसा का प्रशिक्षण, नैतिकता या ईमानदारी का प्रशिक्षण न हो तो सभी के लिए शिक्षा यह घोष जटिलता भी पैदा कर सकता है। शिक्षा तथा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का सन्तुलन बन सके, तभी शिक्षा को व्यापक बनाने का प्रयत्न अधिक लाभदायी होगा। शिखर सम्मेलन में संभागी इस पर गहराई से विचार करें।''

अणुव्रत विश्व भारती
की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका
ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

एक दिन देश-दुनिया में
लाखों लोगों द्वारा

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत गीत महासंगान

श्रेष्ठ भारत का शंखनाद

18
जनवरी
2024

संपर्क सूत्र :
अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत
9737280171, 9374613000
9825404433, 9374726946

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

एक विश्व ❁ एक स्वर ❁ मानव धर्म मुखर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

74वां अणुव्रत अधिवेशन

18, 19 व 20 नवम्बर, 2023 | नंदनवन, मुंबई

पावन सान्निध्य :
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी

अणुव्रत समाचार

प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा को मिलेगा अणुव्रत पुरस्कार

अणुविभा अध्यक्ष ने की विभिन्न पुरस्कारों की घोषणा

मुंबई। अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) ने विभिन्न क्षेत्रों में दिये

जाने वाले पुरस्कारों की घोषणा की है। वर्ष 2023 का सर्वाधिक प्रतिष्ठित 'अणुव्रत पुरस्कार' मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता, सादगीपूर्ण जीवनशैली एवं नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा के लिए जाने-माने उद्योगपति व समाजसेवी रतन टाटा को दिया जाएगा। इसके अन्तर्गत डेढ़ लाख रुपये का चेक, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाता है। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 1 अक्टूबर को अन्य पुरस्कारों की भी घोषणा की।

वरिष्ठ साहित्यकार व गीतकार, रेडियो उद्घोषक एवं वर्तमान में पं. जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी राजस्थान के अध्यक्ष इकराम राजस्थानी को 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' प्रदान किया जाएगा। इसके तहत 51 हजार रुपये का चेक, स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जाएंगे।

अणुव्रत आंदोलन को अपनी सुदीर्घ समर्पित सेवाएं प्रदान करने के लिए अणुव्रत कार्यकर्ता व अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष मुंबई के डालचंद कोठारी को 'अणुव्रत गौरव सम्मान' प्रदान किया जाएगा। इसके तहत स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

नयी पीढ़ी के सन्तुलित विकास हेतु अणुव्रत आंदोलन के महत्वपूर्ण प्रकल्प जीवन विज्ञान कार्यक्रम को अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करने के लिए दक्ष प्रशिक्षक चेन्नई के राकेश खटेड़ को 'जीवन विज्ञान पुरस्कार' प्रदान किया जाएगा। इसके अन्तर्गत एक लाख रुपये का चेक, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाता है।

सांप्रदायिक सौहार्द के भावों का हो विकास - आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के दौरान कार्यक्रमों की धूम

मुंबई। अणुव्रत यात्रा प्रणेता अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के भीतर अनेक प्रकार की वृत्तियां होती हैं। वृत्तियां अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी हो सकती हैं। आदमी

को ऐसा प्रयास करना चाहिए कि वह दुष्प्रवृत्तियों से बचते हुए सद्प्रवृत्तियों से भावित हो।

आचार्य श्री 1 अक्टूबर को घोड़बंदर रोड स्थित नंदन वन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के पहले दिन सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के अवसर पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आदमी को एकत्व की भावना का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने भी उपस्थित जनता को उद्बोधित किया। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने भी विचार रखे।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत आन्दोलन द्वारा मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अभिनव आयोजन 1 से 7 अक्टूबर तक किया गया। इस दौरान संपूर्ण भारतवर्ष के साथ ही नेपाल की अणुव्रत समितियों की ओर से आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से अणुव्रत दर्शन जन-जन तक पहुँचा।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, विनोद कोठारी, माला कातरेला समेत प्रबन्ध मण्डल के पदाधिकारियों, संगठन मंत्रियों, राज्य प्रभारियों व कार्यसमिति के सदस्यों ने विभिन्न स्थानों पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समितियों व मंचों को गौरवान्वित किया।

अणुव्रत प्रबोधन कार्यकर्ता निर्माण शिविर

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में 'अणुव्रत प्रबोधन कार्यकर्ता निर्माण शिविर' का आयोजन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की सन्निधि में 1-2 अक्टूबर को नंदनवन परिसर में हुआ।

प्रथम सत्र में अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने अणुव्रत के नियम एवं आचार संहिता के बारे में बताने के साथ ही वर्गीय अणुव्रत पर प्रशिक्षण दिया। मुंबई के कमल नौलखा ने पर्यावरण संरक्षण विषय पर पीपीटी द्वारा प्रस्तुति दी। मुनिश्री अभिजीत कुमार ने नशामुक्ति के विषय में प्रशिक्षण दिया।

2 अक्टूबर को मुनिश्री मोहजीत कुमार ने अणुव्रत का इतिहास विषय पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया। मुनिश्री सिद्ध कुमार ने दैनिक चर्या में अणुव्रत के प्रयोग की शिक्षा दी। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने संस्था की कार्यपद्धति और गतिविधियों की जानकारी दी।

सभी संभागियों ने प्रशिक्षण हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अणुव्रत का कार्य करने का संकल्प लिया। शिविर के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. कमलेश नाहर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ऑनलाइन प्रशिक्षण का क्रम निरंतर जारी है। इसी बीच व्यक्तिश: प्रशिक्षण का यह प्रयोग नई संभावना जगाता है।

पूर्वांचल अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी

सिलीगुड़ी। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी द्वारा पूर्वांचल अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी का आयोजन 8 अक्टूबर को किया गया।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुनिश्री प्रशांत कुमार ने कहा कि अणुव्रत का जितना व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा, उतना ही मानव जाति का उत्थान होगा।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन को और अधिक गति देनी है जिससे विश्व में भारत की पहचान आध्यात्मिकता के साथ-साथ नैतिक, प्रामाणिक एवं स्वस्थ आचार-विचार के रूप में व्यापक बने।

मुख्य अतिथि अमित जैन के अलावा अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ तथा अन्य पदाधिकारियों ने विचार रखे। बंगाल, बिहार, असम और नेपाल के 16 क्षेत्रों के 70 कार्यकर्ता इस संगोष्ठी में शामिल हुए।

तीन स्थानों पर अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत **सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति** द्वारा फुलबारी बाईपास स्थित टी लीफ रिजॉर्ट में निर्मित अणुव्रत वाटिका तथा अणुव्रत पथ का उद्घाटन अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने किया।

ग्रेटर सूरत अणुव्रत समिति की ओर से टी. डी. वशी शिशु विद्यालय परिसर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ 5 अक्टूबर को विद्यालय के ट्रस्टी अणुव्रत सेवी लक्ष्मीलाल बाफना ने किया।

बालोतरा अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ मदर टेरेसा सीनियर सेकंडरी विद्यालय में किया गया। वाटिका में कई किस्म के पौधे लगाये गये हैं।

डिजिटल डिटॉक्स के बैनर का अनावरण

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के प्रवचन के दौरान 2 अक्टूबर को अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम के बैनर का अनावरण किया। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के उपयोग को संयमित करने हेतु आमजन को जागरूक करने के लिए यह कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस अवसर पर डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक प्यारचंद मेहता, सह संयोजक दलपत बाबेल व ललित मेहता, अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता, मंत्री राजेश चौधरी आदि उपस्थित थे।

11 अक्टूबर को मुकेश पटेल स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट विले पार्ले तथा एस. एन. डी. टी. वीमन्स यूनिवर्सिटी सांताक्रूज में आयोजित कार्यक्रमों में डॉ. अभिजीत मुनि ने ड्रग्स के दुष्परिणामों से अवगत कराया तथा इससे बचने के उपायों की जानकारी दी। जागृत मुनि ने मोबाइल के एडिक्शन से बचने के उपाय बताये।

किडजोन में बापू का रूप धरे बच्चों ने मन मोहा

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास प्रवास स्थल नंदन वन में अणुव्रत विश्व भारती का प्रकल्प किडजोन बच्चों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहाँ महात्मा गांधी जयंती पर गांधीजी, मोदीजी, मुन्ना भाई, सर्किट का रूप धरे बच्चों ने लोगों का मन मोह

लिया। गुरुदेव ने महती कृपा कर बच्चों की प्रस्तुति को गौर से देखा और आशीष प्रदान करते हुए कहा कि मुंबई का यह किडजोन पिछले अनेक किडजोन की अपेक्षा विशाल और ज्यादा उपयोगी लग रहा है।

जीवन विज्ञान ऑनलाइन प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का परिणाम घोषित

अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा 23 अगस्त से 5 सितम्बर तक आयोजित ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के लेवल-1 का परिणाम राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में आयोजित जूम मीटिंग में 15 अक्टूबर को घोषित किया गया। इसमें सफल 139 प्रतिभागियों की घोषणा करते हुए नाहर ने कहा कि आगे के लेवल हेतु ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन शीघ्र ही प्रस्तावित है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक एवं राष्ट्रीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी, राष्ट्रीय तकनीकी प्रभारी विमल गुलगुलिया ने भी विचार रखे।

बाल संसद में नशे के खिलाफ चली बहस

राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय में 3 से 5 अक्टूबर तक अणुव्रत बालोदय शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान हुई बाल संसद में 'नशे की समस्या और समाधान के उपाय' विषय पर चली बहस के बाद एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया, जिसके मुख्य बिंदु थे -

■ सबसे अधिक खतरनाक नशीले पदार्थों के उत्पादन पर तुरन्त रोक लगायी जाये और धीरे-धीरे नशे का उत्पादन पूरी तरह बंद किया जाये।

■ गैरकानूनी तरीके से नशीले पदार्थ बनाने वालों पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाये।

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

प्रत्येक मंगलवार संयम दिवस

प्रत्येक मंगलवार अर्थात् 'संयम दिवस' संयम के अभ्यास का दिन है। मुख्यत: तीन संकल्प इस दिन के लिए निर्धारित हैं। संयम के प्रति हमारी यह जागरुकता हमारे आचार, विचार और व्यवहार में संयम को अभिन्न हिस्से के रूप में शामिल करने में मददगार सिद्ध होगी।

संयम दिवस के ये तीन संकल्प हैं –

1. एक घंटा मौन साधना करूँगा/करूँगी।
2. नशे से मुक्त रहूँगा/रहूँगी।
3. मांसाहार नहीं करूँगा/करूँगी।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 69 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी	–	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :